IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के भावनात्मक बुद्धिमता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

सुशिल कुमार राय

शोध–प्रज्ञ, शिक्षाशास्त्र विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अमजेर, राजस्थान, भारत

एवं

प्रो0 (डॉ0) प्रताप सिंह राय

प्रतिकुलपति, भगवंत ग्लोवल विश्वविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखंड

सार–संक्षेप

वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास से भी जुड़ी हुई है। किसी विषय, स्थिति अथवा अध्ययन प्रक्रिया के प्रति विद्यार्थियों की मानसिकता एवं झुकाव उनकी शैक्षणिक सफलता को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भावनात्मक बुद्धि, जो कि व्यक्ति की भावनाओं को समझने, प्रबंधित करने और दूसरों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता को दर्शाती है, शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भावनात्मक रूप से बुद्धिमान विद्यार्थी न केवल अपने अध्ययन से संबंधित तनाव को बेहतर ढंग से संभाल सकते हैं, बल्कि वे अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सकारात्मक सोच और आत्म–नियंत्रण का भी प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त, यह भी देखा गया है कि उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी समूह गतिविधियों में अधिक कुशल होते हैं और वे टीमवर्क एवं नेतृत्व कौशल को बेहतर तरीके से विकसित कर सकते हैं। जिन विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि उच्च होती है, वे शैक्षणिक चुनौतियों का अधिक प्रभावी ढंग से सामना कर पाते हैं और बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जिससे इनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है।

शब्द कुंजी : भावनात्मक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि, कौशल विकास आदि।

प्रस्तावना

शिक्षा का मानव सभ्यता के उत्कर्ष में सर्वाधिक योगदान है किन्तु सभ्यता के विकास की इस राह में कई बाधाएं और समस्याएं आती है और मानव ने विभिन्न प्रकार की विधियों से उनका समाधान किया है। वर्तमान में शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए अनुसंधान एक प्रभावशाली प्रक्रिया है, जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है जिसके द्वारा मानवीय ज्ञान में वृद्धि की जाती है और मानव जीवन को सुगम बनाया जाता है। हमारे ''भावों'' का जीवन में अत्यधिक महत्व है और वर्तमान समय में शिक्षा और मनोविज्ञान का संबंध भावनाओं से उत्तरोत्तर बढ रहा है। भावनाओं और भावनाात्मक बुद्धि लब्धि का अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में नवीन सम्प्रत्यय है। व्यक्ति जन्म के साथ ही भावनात्मक संवेदनशीलता, भावनात्मक स्मृति, भावनात्मक प्रक्रिया एवं भावनात्मक अधिगम जैसी, योग्यताओं को साथ लेकर आता है। ये योग्यताएं पर्यावरण से अनुक्रिया द्वारा प्राप्त अनुभवों एवं परिपक्वता के साथ विकसित होती है। अतः कहा जा सकता है कि व्यक्ति की भावनाात्मक बुद्धि उसे सफलता के सोपान पर पहुँचाने की योग्यता है। भावनाात्मक बुद्धि किसी व्यक्ति की वह योग्यता होती है जिससे वह अपने सवेगों को नियन्त्रित और सन्तुलित करता है।

वर्तमान समय जो आधुनिकता, भौतिकता, विज्ञान एवं तकनीकों की ओर अग्रसर है इनमें मानव सभ्यता के विकास के साथ साथ प्रतिस्पर्धा में भी वृद्धि देखी जा सकती है। वर्तमान युग एक आर्थिक युग बन गया है जहाँ अंतहीन इच्छाएं और आवश्यकताओं ने मानव के जीवन को अत्यधिक संघर्षमयी बना दिया है। प्रतिस्पर्धा एवं संघर्षमय जीवन ने छात्रों को चिंता, दवाब, द्वंद्व, दुश्चिंता, तनाव, भय की स्थिति में ला खड़ा किया है। भावनाात्मक बुद्धि व्यक्ति की नेतृत्व क्षमता को भी प्रभावित करती है। एक नायक के रूप में व्यक्ति को अपने दल के सदस्यों के व्यवहार ,अभिवृत्ति ,तनाव ,दबाव आदि को समझने तथा दल के उद्देश्यों को प्रेरित रखना, उन्हें सुनना और उनकी शक्तियों का उपयोग कर उन्हें सतत गतिशील बनाए रखना आवश्यक होता है। ये योग्यताएँ भावनाात्मक बुद्धि द्वारा ही आती है। भावनाात्मक बुद्धि एक रामबाण अभियोग्यता है, जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं की योग्यताओं एवं कमियों की पहचान कर सकता है और योग्यताओं का उपयोग सभी प्रकार के कार्यों को सफलतापूर्वक करने में कर सकता है। यहाँ तक कि वह अपनी बुद्धि का समूचित उपयोग भी भावनाात्मक बुद्धि द्वारा कर सकता है। मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी है भावनाात्मक बुद्धि मानव विकास और बुद्धि के महत्वपूर्ण पहलुओं में से अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। मानव का अधिकांश व्यवहार भावनाों से परिचालित होता है। भावना मानव व्यवहार को दिशा प्रदान करता है। भावना शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं और अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नवीनतम शोधों से ये तथ्य सामने आये हैं कि व्यक्ति को जीवन में मिलने वाली सफलता के पीछे सांवेगिक बुद्धि का महत्वपूर्ण योगदान होता है। व्यक्ति अपने जीवन में कितना सफल होगा इसकी भविष्यवाणी का आधार सांवेगिक बुद्धि ही होती हैं।[2]

शैक्षिक उपलब्धि का शाब्दिक अर्थ शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धि है। शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक व शास्त्रीय कार्य की दक्षता एवं विद्यार्थी के आयु स्तर के अनुरूप निर्धारित शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति से अभिव्यक्त होता है जिसका मूल्यांकन अध्यापकों द्वारा परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि या अकादमिक प्रदर्शन वह सीमा है जिस तक एक छात्र, शिक्षक या संस्थान ने अपने छोटे या दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त किया

है। उच्च माध्यमिक विद्यालय में उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के शैक्षिक बेंचमार्क को पूरा करना शैक्षणिक उपलब्धि का प्रतिनिधित्व करता है। अकादमिक उपलब्धि को आमतौर पर परीक्षाओं या निरंतर मूल्यांकन के माध्यम से मापा जाता है। किसी विशेष पाठ या विषय में छात्र ने किस मात्रा में कौशल या प्रवीणता अर्जित कर पाया है। जैसे– 100 छात्रों को एक साल तक स्कूल में वेद की शिक्षा दी गयी। अब इस बात को निर्धारित करना आवश्यक है कि इन छात्रों ने इस अवधि में दिये गये निर्देशों के परिणामस्वरूप वेद में कितना ज्ञान हासिल किया। अतः जिस प्रक्रिया द्वारा वेद में इन छात्रों के ज्ञान अर्जन की जाँच की जाती है, उसे ही शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण कहते हैं। विद्यालय में औपचारिक शिक्षा में शैक्षिक उपलब्धि पर बल दिया जाता है। विद्यार्थियों में विभेदीकरण भी शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर होता है जो विद्यालय व्यवस्थापन में महत्वपूर्ण होता है। शिक्षा की सफलता का आधार शैक्षिक उपलब्धि को माना जाता है।[3]

विद्यार्थी और शिक्षा का एक दूसरे से बड़ा ही गहरा संबंध है। शिक्षा मनुष्य के लिए खान–पान से भी अधिक आवश्यक है। शिक्षा प्रत्येक समाज और राष्ट्र के लिए उन्नति की कुंजी है। अज्ञानता मनुष्य के लिए अभिशाप है, शिक्षा के द्वारा ही हम सत्य और असत्य को जान पाते हैं। विद्यार्थी राष्ट्र की सबसे बड़ी ताकत और सम्पत्ति होते हैं। विद्यार्थी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – विद्या. एवं अर्थी जिसका अर्थ है, विद्या प्राप्ति का इच्छुक। मनुष्य के जीवन का वह समय, जो शिक्षा प्राप्त करने में व्यतीत होता है, 'विद्यार्थी जीवन' कहलाता है। मनुष्य जीवन के अंतिम क्षणों तक कुछ न कुछ शिक्षा ग्रहण करता ही रहता है। प्राचीन काल में पूरे जीवन को कार्य की दृष्टि से चार भागों में बांटा गया था, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। यह पहला ब्रह्मचर्य–काल ही विद्यार्थी जीवन माना जाता है। विद्यार्थी जीवन साधना और तपस्या का जीवन है। यह काल एकाग्रचित्त होकर अध्ययन और ज्ञान–चिंतन का है। यह काल सांसारिक भटकाव से स्वयं को दूर रखने का काल है। विद्यार्थियों के लिए यह जीवन अपने भावी जीवन को ठोस नींव प्रदान करने का सुनहरा अवसर है, यह चरित्र–निर्माण, ज्ञान को सुदृढ़ करने का एक महत्त्वपूर्ण समय है। नए शिक्षक, नए सहपाठी और नया वातावरण मिलता है। वह समझने लगता है कि समाज क्या है और उसे समाज में किस तरह रहना चाहिए? उसके ज्ञान का फलक विस्तृत होने लगता है। पाठ्य–पुस्तकों से उसे लगाव हो जाता है। वह ज्ञान रस का स्वाद लेने लगता है जो आजीवन उसका पोषण करता रहता है। ज्ञान अर्जन की चाह रखने वाला विद्यार्थी जब विनम्रता को धारण करता है तब उसकी राहें आसान हो जाती हैं। विनम्र होकर श्रद्धा भाव से वह गुरु के पास जाता है तो गुरु उसे सहर्ष विद्यादान देते हैं। वे उसे नीति, ज्ञान एवं सामाजिक ज्ञान देते हैं, गणित की उलझनें सुलझाते हैं, और उसके अंदर विज्ञान की समझ विकसित करते हैं। उसे भाषा का ज्ञान दिया जाता है, ताकि वह अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सके। इस तरह विद्यार्थी जीवन सफलता और पूर्णता को प्राप्त करता हुआ प्रतिभाशाली बनता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है। इस अवस्था में विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के भावनाओं का अनुभव स्वयं में करता है। यदि इन भावनाओं के उचित विकास हेतु विद्यालय उन्हें उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है, तो उनकी भावनाात्मक बुद्धि को सकारात्मक दिशा दी जा सकती है।

निष्कर्ष

शिक्षा विद्यार्थी की अर्न्तनिहित योग्यताओं को बाहर निकलकर उसके व्यवहार में आपेक्षित परिवर्तन करती है। शिक्षा द्वारा विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा द्वारा योग्य नागरिक का सृजन किया जाता है। वर्तमान में विद्यार्थी इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में बढ़ती भौतिकता और माता–पिता की बढ़ती आकांक्षाओं के कारण दुश्चिन्ताओं का शिकार हो जाता है। विद्यार्थी की सफलता के लिए भावनाओं पर नियंत्रण एवं दुश्चिन्ताओं का समाधान आवश्यक हो गया है। भावनाात्मक बुद्धि लब्धि के उचित प्रबन्धन के माध्यम से तनाव, कुण्ठा, अवसाद जैसी अवरोधी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

संदर्भ :

1. उपाध्याय, भागर्व एवं त्यागी (2007) अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं शिक्षण, अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन, जयपुर.
2. सिंह, नागेन्द्र प्रताप एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021), सतना जिले में उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑु एप्लाइड रिसर्च, 2021, 7(6)
3. बालमुकुन्द, एम एवं गौधमन, के. सलेम (2009), संवेगात्मक बुद्धि, आवश्यकता एवं महत्व, साइको–लिन्गुआ, 38(2)